







RBP/ICPU/Samtse/A-208/2024()

Date:13.05.2024

Handover of Mr. Wangdi	Dorji (alias	Wangdi) to His Fa	ther, Mr.
This is to handover Mr. Dorji, also kn approximately in 2011/2 treatment of the Shhradd	own by the alias 012 and he was mentally	9, to his father, Mr. Wangdi, had been rep y unsound as well. He wa lation of India in 2023.	Wangdi. Mr. oorted missing as under the care and
On May 12, 2024, two on Samtse Checkpost in effort dedication, we were able establish contact. Through Dorji's father, Mr.	orts to locate Mr. to locate Mr. th Mr. Wangdi	dha Rehabilitation Found Dorji's family. With Dorji's brother, Mr. , we were able to confirm cook at Gyelsung project.	Wangdi, and hat Mr.
Wangdi, who hails from	pet name is W Bidung, Tashigang, and	angdi. He was born in 19 later settled in Thimphu	985 to Mr.
With these details in place his father, Mr. Nikhilesh Sangada, the s	Wangdi, on May 13, 202	4, in the presence of Mr.	Samar Basak and
We express our sincere g Foundation in this proces a smooth reunion and a b	ss and extend our best w		lha Rehabilitation Dorji and his family for
Handed over by		Taken over	· by
			Eli 🦠
Mr Samar Mr Nikhelesh	de N.D	Mr. Namgay	Wangdi (Father)

১৩ বছর পর বাবার কাছে ফিরল ছেলে

বানারহাট, ১৩ মে : ছেলে আর বেঁচে নেই. ধরেই নিয়েছিলেন বাবা নামগে ওয়াংদি। এক-দু'ৰছর তো নয়, দীর্ঘ ১৩ বছর ধরে ছেলে ফোনসে ওয়াংদির কোনও খৌজই পাননি তিনি। অবশেষে প্রায় ১৩ বছর পর একটি স্বেচ্ছাসেবী সংগঠনের চেষ্টায় ফিরে পেলেন ছেলেকে। কী ঘটেছিল প্রায় দেড় দশক

লগেণ তখন ফোনসের বরস ছিল ২৩ বছর। তাঁদের বাড়ি ভূটানের রাজধানী থিম্পুতে। একদিন ফোনসে



বাবার সঙ্গে বগড়া করে রাগ করে থেকাসেরী সংগঠন তাঁকে উদ্ধার তারপরে বাঁজ নেওয়া শুরু হয়। বাড়ি হেড়ে চলে যান থালি বাড়ি করে। চেয়াইয়েরই একটি মানসিক এদিন খ্রানীয় পুলিশ প্রশাসন ও



15.05.2024

যেন সিনেমা। বাবার সঙ্গে ঝগডা করে ভারতে, 13 বছর পেল বাডি ফিবলেন ভটানেব শেওয়াং - Bhutanese Man **Returns Home**

By ETV Bharat Bangla Team



13 वचन त्यन छात्रङ (भाक वाड़ि किस्ताम कुठेरमा (१७३१)(मिजव हित)

Bhutanese man returns home from India: ঠিক যেন সিনেমার গল্প । বাবার সঙ্গে ঝগড়া করে ভারতে চলে এসেছিলেন ভটানের শেওয়াং ওয়াংদি । এরপর মানসিক ভারসাম্যহীনও হয়ে भर्छन । 13 वष्त्र भत्र मस्भूनं भूष इत्य वाछि फित्रलन शिल्भूत এই युवक ।

জলপাইপ্রডি. 15 মে: এই ঘটনা সিনেমার গলকেও হার মানাবে । বাবার সঙ্গে ঝগাড়া করে আঞ্চত শেওয়াংয়ের বাবা ।

জানা গিয়েছে, খিম্পুর এক বেকারিতে কাজ করতেন শেওয়াং । 2011 সালে বাবার সঙ্গে ঝগডা করে খিম্পু থেকে সামসি হয়ে ভারতে চলে আসেন তিনি । এরপর থেকে পরিবারের সঙ্গে আব যোগাযোগ হয়নি । মেস্তাইজে একটি হোটোল কাজ কবাতে থাকেন ভিনি । জাঁব পরিবারও ছেলেকে থুঁজে পাওয়ার আশা ছেডে দেয় । এভাবেই চলছিল । ভবে কোভিডের সময় শেওয়াং কাজ হারান । এরপরই তিনি মানসিক ভারসাম্য হারান । এরপর তিনি

মুশ্বইয়ের এক স্বেচ্ছাসেবী সংগঠনের সান্নিধ্যে আসেন । ভাদের চেষ্টাভেই অবশেষে দেশে ফিরলেন শেওয়াং।

মন্ত্রইযের শ্রদ্ধা রিহ্যাবিলিটেশন ফাউন্ডেশনের সদস্য সমর বসাক বলেন, "আমরা চেলাই থেকে ফেজকে উদ্ধার করি । তাঁর নাম ফেজ বলেই জানভাম । এরণর তাঁকে মন্থইতে নিতে আসি । সেখানেই তাঁর চিকিৎসা চলে । তিনি মানসিক তারসাম্যহীন হয়ে পড়েছিলেন । ধীরে ধীরে চিকিৎসা করিয়ে আমরা ওঁর কাউন্সেলিং করে । প্রথমে নিজের নামটা বলভেই পারছিলেন না । পরে ধীরে ধীরে তাঁর নাম বলেন । তবে কোখায় তাঁর বাডি, সেটা বলভে পারেননি এরপর আমরা ওর মুখ খেকে ভূটানের কথা জানতে পারি । ভূথনই জানা যায়, ভাঁর বাডি ভটানের খিম্পতে।"

সমর বসাক আরও বলেন, "আমরা কমেক বছর ধরেই ভাঁকে ভুটানে ফেরানোর চেষ্টা করছিলাম । ভবে পারছিলাম না । আমাদের বলা হয়, সামসিতে ওর বাডি । এরপর আমরা ভারত-ভটান সীমার সামসিতে আসি । সেখানে খোঁজ করেও কিছু পাইনি । ওর বাডির ঠিকালা কোনও ভাবেই পাওয়া যান্দিল লা । কিন্তু বাডির যাওয়ার জন্য ভিনি মুখিয়ে ছিলেন । এরপর তিনি আমাদের জানান যে, তাঁর বাড়ি থিম্পুতে । সেখানে এসএসবি-এর সঙ্গে আমরা যোগাযোগ করি । ভূটানের ইমিগ্রেশন বিভাগের সঙ্গে কথা হয় । স্থানীয় সমাজসেবী রেজা করিম, রাজেশ প্রধানের সঙ্গে যোগাযোগ হয় । অবশেষে থিম্পুতে ভার বাবা নামগে ওয়াংদির খোঁজ পাওয়া যায় । ভাঁর বাবা এসে দই দেশের সরকারি নিয়মকানন প্রক্রিয়া সারেন । এরপর নিজের দেশ ভূটানে ফিরে যান শেওয়াং ওয়াংদি ।"

এভ বছর পর ছেলেকে ফিরে পেয়ে আবেগে ভাসলেন শেওয়াংযের বাবা নামগে ওয়াংদি । তিনি বলেন, 2011 সালে আমার ছেলে ভারতে আসে । তারপর খেকে ভাকে আর পাওয়া যায়নি । আমবা ভোবছিলাম মে আব রেই । মব আশা ছেন্দে দিয়েছিলাম । অবাশয় ভাকে পেলাম । थूव छाला लाগছে । 13 वषत शत (ছलেक वाफ़ि नित्य याण्डि ।

বাডি ফেরার আনন্দে উচ্ছসিত শেওয়াং ওয়াংদিও । তিনি বলেন, "বাবাকে গেয়ে থব তালো লাগছে । ভুটান ছেডে আমি আর কোখাও যাব না । আমার খুব ভালো লাগছে ।"

বাড়ি ছেড়ে ভারতে চলে এসেছিলেন ভুটানের এক নাগরিক । কোভিডের সময় কাজ হারিয়ে চামুর্টির সমাজসেবী রেজা করিম ও রাজেশ প্রধান জানান, "খিম্পুর বেকারিতে বাবা ও ছেলে ভিনি আবার মানসিক ভারসামাহীন হয়ে গড়েন । স্বেচ্ছাসেরী সংগঠনের উদ্যোগে অবশেষে 13 কাজ করভেন । 2011 সালে বাবার সঙ্গে ঝগড়া করে ছেলে বাড়ি খেকে বেরিয়ে যান । বছর পর ভিনি বাড়িতে ফিরলেন । খিম্পুর বাসিন্দা শেওরাং ওরাংদি । ছেলেকে পেয়ে ভিনি ভারতে চলে আসেন কাজের জন্য । চেরাইয়ের হোটেলে কাজ করতে করতেই কোভিডের সময় তাঁর কাজ চলে যায় । ফলে মানসিক তারসাম্যাহীন হয়ে পডেন । এরপর মুশ্বইয়ের নিখিলেশ সাংবার মন্ত্রই রিহ্যাবিলিটেশন ফাউন্ডেশন ভাঁকে চিকিৎসা করিয়ে ভালো করে ভোলে । মুশ্বই থেকে তাঁকে নিমে আসা হয় । আমাদের সঙ্গে ওরা যোগাযোগ করে । আমরাও এসএসবি ভূটান ইমিগ্রেশনের সঙ্গে যোগাযোগ করিয়ে দিই । ভূটানের প্রশাসন শেওয়াংয়ের বাবার খোঁজ করে জাঁক সামসিতে ডেকে আনা হয । এসএসবি-র আসিস্টান্ট কমান্ডেন্ট কেপি প্রসন থব সহযোগিতা করেছেন শেওয়াংকে বাডি ফিরিয়ে দিতে । আমাদের থব তালো লাগছে এই কাজের অংশ হতে পেরে ।



तेरह वर्ष से लापता भूटानी युवक अपने पिता के साथ स्वदेश लौटा

संवादसूत्र, चामुची : एक भूटानी नागरिक भारत में करीब 13 साल तक लापता होने के बाद सोमवार को अपने पिताजी से मिला। मुलाकात के दौरान बाप-बेटे ने एक दूसरे को गले लगाते हुए अपने स्नेह को व्यक्त किया। चामुर्ची चेक पोस्ट स्थित सामसे भटान गेट पर भटानी यवक को लेने उनके पिता नामघे वांगदी आए थे। भटान की सभी प्रशासनिक एवं कानूनी प्रक्रिया को परी करने के बाद वह अपने बेटे



फोर्न्से वांगदी को अपने घर ले गए। भारत-भूटान सीमा पर पिता के साथ फोर्नशे वांगदी • जागरण

से भारतीय सीमा में प्रवेश करने के संगड़ा ने इस भूटानी युवक फोन्से पश्चात यह युवक भारतीय सीमा में पश्चात फोनशे वांगदी लापता हो गया वांगदी को लेकर मुंबई के श्रद्धा प्रवेश कर भाग गया। कई वर्षों तक था। उसके पिता द्वारा कई जगह तलाश रिहैबिलिटेशन केंद्र से आए थे। जहां दक्षिण भारत के चेन्नई में इस लड़के ने के बाद भी अपने बेटे का कोई सुराग आज उन्होंने इस भुटानी युवक को होटल में काम किया। कोविड महामारी नहीं लगा सके। उन्हें लगा उनका बेटा सुरक्षित उनके पिता को सौप दिया। के समय जब यह युवक रोजगार अब इस दिनया में नहीं है। लेकिन श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के विहीन हो गया, तो मानसिक रूप से अचानक फिर से 13 वर्ष बाद उन्हें समाजसेवी समर बसाक ने बताया काफी बीमार पड़ गया। किसी ने इस लापता हुए उनके बेटे को मिलने से कि यह भटानी नागरिक अपने पिता के लड़के को सड़क पर पड़ा हुआ मिला। उन्हें यकीन ही नहीं हुआ। मंबई के साथ भटान की राजधानी थिए में किसी एवं इस भटानी नागरिक की चेन्नई के

उल्लेखनीय है कि 2011 में भूटान समाजसेवी समर बसाक एवं निखिलोश अपने पिताजी से अनबन होने के श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन के बेकरी में काम करता था। अचानक एक मानसिक अस्पताल में लाया गया।



janpath.news@gmail.com

जनपथ समाचार

13 वर्षों तक गुमशुदगी के बाद भूटानी युवक की हुई स्वदेश वापसी

गले लगाते हुए अपना स्रेह व्यक्त

उल्लेखनीय है कि 2011 में भूटान से भारतीय सीमा में प्रवेश करने के बाद फोनशे वांगदी नामक यह युवक लापता हो गया था। उनके पिता द्वारा कई जगह खोजने के बाद भी जब अपने बेटे का कोई सुराग नहीं मिला तो उन्हें लगा उनका बेटा अब इस दुनिया में नहीं है। लेकिन अचानक 13 वर्ष बाद फिर से अपने लापता बेटे मिलने पर उन्हें यकीन ही नहीं हुआ। जानकारी के अनुसार, मुंबई के श्रद्धा रिहेबिलीटेशन फाउंडेशन के समाजसेवी समर बसाक एवं निखिलेश सांगड़ा ने इस भूटानी युवक फोनशे बांगदी को मुंबई के श्रद्धा रिडेबिलीटेशन केंद्र से लेकर आए थे। यहां आज उन्होंने इस भूटानी युवक को सुरक्षित उनके पिता को सीच तिया। फाउंडेणत

भ करेत : भारत में किया था प्रवेश मुंबई में अद्भाव के बाद भारत में के बाद पुक्क के मुंबई में अद्भावक को मुंबई में अद्भावक के मुंबई में अद्भावक के मुंबई में अद्भावक के अपने पुक्क के मुंबई में अद्भावक के मुंबई में अद्भावक के अपने पुक्क के मुंबई में अद्भावक के मुंबई में अद्भावक के अपने पुक्क के अपने अपने अद्भावक के अदि के अद्भावक के अद्भावक के अद्भावक के अद्भावक के अद्भावक के अद्भावक के अदि क

को नहीं रोक सका। इस मुलाकत के दौरान बाप-बेट ने एक दूसरे को 🔲 मुंबई की सामाजिक संस्था के प्रयासों से दीरान, काउंसलिंग में बुकक वे किया। यह घटना किसी फिल्मी फिर घरवालों से मिला



पत्ति को यांच दिया प्रवाहकत के सार सकत में तथाय पर पुरानी जागिक अपने विजाय पर पुरानी जागिक अपने विज्ञ से होने के प्रकार यह पुरक भारतीय कोजिंद हातानारी के समय जब यह हुजा पितन के बार लांगती को की पूरी करनी प्रवाह यह पुरक भारतीय कोजिंद हातानारी के समय जब यह हुजा पितन के बार लांगती को की पूरी करनी में बाद मार उन्हों प्रविक्त सम्प पूरान की प्रवाहनी भिंदू में सीचा में प्रकार सभा गाया को बुक्त स्थान सिंहती हो गए तो चेन्द्र में एक स्वानित्त करनी कोजिंद में की अपने पर किसी बेकरी में काम करता था। वर्षों तक दक्षिण भारत के चेनई में मानसिक रूप से काफी बीमार पड़ लाया गया। वर्षों 6 महीने तक रखने हो गए।

बताया उनका घर भुटान के थिंग गत वर्ष भी फाउंडेशन की ओ से युवक को सामसे भूटान आकर उसके परिवार से मिलवाने की कोशिश की गई थी. लेकिन भली भांति परिजनों के नाम-पता न बत पाने के कारण उसमें सफलता नई मिली थी। लेकिन इस बार चामूर्च चेकपोस्ट के सशस्त्र सीमा बल की 17वीं बटालियन के अस्मिस्टें कमांडेंट केपी प्रसून एवं उनवे सहयोगी अधिकारियों, चामचं आउटपोस्ट के पुलिस अधिकारी, स्थानीय समाजसेवी रेजा करीम पहिल अल लोगों की सहयोग में आज 13 वर्षों से लापता इस भूटान यवक की अपनी स्वदेश वापसी ह यह काफी खुशी की बात है। आज चामची चेक पोस्ट स्थित